



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 183 ]

नई दिल्ली, मंगलवार, जुलाई 10, 2001/आषाढ़ 19, 1923

No. 183]

NEW DELHI, TUESDAY, JULY 10, 2001/ASADHA 19, 1923

महापत्तन प्रशुल्क प्राधिकरण

अधिसूचना

नई दिल्ली, 10 जुलाई, 2001

सं. टीएमपी/88/2000-पीपीटी.—महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 48 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, महापत्तन प्रशुल्क प्राधिकरण एतद्वारा, संलग्न आदेशानुसार पारादीप पत्तन न्यास द्वारा घाटभाड़े की वसूली करने के प्रयोजन से अधिक कार्बन वाले फेरो क्रोम (एचसीएफसी) के वर्गीकरण से संबंधित मुद्दे का निपटारा करता है।

अनुसूची

मामला सं० टीएमपी/88/2000-पीपीटी

पारादीप पत्तन न्यास (पीपीटी)

..... आवेदक

आदेश

(28 जून 2001 को पारित)

यह मामला घाटभाड़े की वसूली करने के प्रयोजन से अधिक कार्बन वाले फेरो क्रोम (एचसीएफसी) के वर्गीकरण के बारे में पारादीप पत्तन न्यास (पीपीटी) से प्राप्त प्रस्ताव से संबंधित है।

2.1 प्रारंभ में पीपीटी ने घाटभाड़े की वसूली करने के प्रयोजन से अगस्त, 2000 में एचसीएफसी और चार्ज क्रोम के वर्गीकरण के संबंध में प्रस्ताव भेजा था। परंतु पीपीटी द्वारा भेजे गए प्रस्ताव में निर्णय हेतु सही संदर्भ नहीं दिया गया था। ध्यान दिलाए जाने पर पीपीटी ने दिसंबर, 2000 में संशोधित प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें निर्णय हेतु सही विषय दिया गया था।

2.2 पीपीटी ने अपने प्रस्ताव में निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किए थे :-

- (i) पीपीटी की दरों के मान में 'चार्ज क्रोम' और 'फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्को' के लिए पृथक वर्गीकरण तथा पृथक घाटभाड़ा दरें दी गई हैं जिनकी वर्तमान दरें क्रमशः 15/- रु० प्रति मी.ट. और 132.25/-रु० प्रति मी.ट. है। घाटभाड़ा अनुसूची में एचसीएफसी का पृथक वर्गीकरण नहीं किया गया है। पीपीटी ने एचसीएफसी को घाटभाड़े की वसूली के लिए 'फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्क' की श्रेणी में वर्गीकृत करने का निर्णय किया है।
- (ii) पीपीटी की दरों के मान की घाटभाड़ा अनुसूची के अनुसार यदि कार्गो को विनिर्दिष्ट रूप से वर्गीकृत नहीं किया जाता है तो घाटभाड़े की वसूली कार्गो के जहाज़ पर्यंत (एफओबी) मूल्य के 0.5% की दर पर की जा सकती है। यह एचसीएफसी के लिए 115/- रु० प्रति मी.ट. से कम बैठती है।
- (iii) पत्तन महालेखाकार (लेखा परीक्षा) ने इस बात पर बल दिया है कि एचसीएफसी को चार्ज क्रोम के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए, जबकि निर्यातको ने अनुरोध किया है कि एचसीएफसी को फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्कों के रूप में ही वर्गीकृत रहने दिया जाए।

2.3 इस परिप्रेक्ष्य में, पीपीटी ने इस प्राधिकरण से निम्नलिखित मुद्दे पर निर्णय करने का अनुरोध किया है :-  
 "क्या घाटभाड़े की वसूली करने के प्रयोजन से एचसीएफसी को 'चार्ज क्रोम' के रूप में वर्गीकृत किया जाए।"

3.1 निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार, पीपीटी का प्रस्ताव सभी संबंधित प्रयोक्ताओं/पत्तन प्रयोक्ताओं की प्रतिनिधिक संस्थाओं को उनकी टिप्पणियों के लिए परिचालित किया गया। उनसे प्राप्त टिप्पणियों का सार इस प्रकार है :-

#### टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी लि० (टिस्को)

- (i) एचसीएफसी और चार्ज क्रोम दो भिन्न श्रेणियों हैं और उनका लक्ष्य प्रयोग भी बिल्कुल भिन्न होता है। एचसीएफसी को केवल नामों में समानता के कारण चार्ज क्रोम के समान नहीं माना जा सकता।
- (ii) एचसीएफसी का प्रयोग विशेष इस्पात के निर्माण में किया जाता है जिसमें कार्बन अंश बाधा नहीं बनता, चार्ज क्रोम का प्रयोग मुख्यतया एओडी या बीओडी प्रक्रिया द्वारा स्टेनलेस स्टील के निर्माण के लिए किया जाता है। चार्ज क्रोम कम खर्चीला होता है और इससे प्रयोक्ता को मुक्त लौह अंश प्राप्त होता है।
- (iii) एचसीएफसी एक विशिष्ट फेरो अलॉय है जबकि चार्ज क्रोम में क्रोमियम बहुत कम होता है और

लौह अंश बहुत अधिक होता है। एचसीएफसी और चार्ज क्रोम के लिए एसटीएम विनिर्देश भी भिन्न-भिन्न हैं जो निम्नलिखित हैं :-

विवरण	एचसीएफसी	चार्ज क्रोम	
		अधिक फेरो	कम फेरो
सीआर	62-72%	52-58%	52-64%
सी	4-9.5%	6.8%	4-6%
एसआई	3% अधि.	6% अधि.	8-14% अधि.
एस	0.06% अधि.	0.04% अधि.	0.04% अधि.
पी	0.03% अधि.	0.03% अधि.	0.03% अधि.
एन	0.05% अधि.	0.05% अधि.	0.05% अधि.

### इंडियन चार्ज क्रोम लि० (आईसीसीएल)

पत्तन द्वारा घाटभाड़े की वसूली के लिए एचसीएफसी का फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्कों के अंतर्गत वर्गीकरण निम्नलिखित कारणों से उचित है :-

- एसटीएम विनिर्देशों/भारतीय मानक ब्यूरो के अनुसार, चार्ज क्रोम का निर्माण कम क्रोमियम/फेरो क्रोम अयस्क से किया जाता है।
- चार्ज क्रोम का निर्माण कम क्रोमियम/फेरो क्रोम अयस्क से किया जाता है।
- सभी थोक फेरो अलॉय जैसे - चार्ज क्रोम, उच्च कार्बन फेरो क्रोम, सिलिको क्रोम, सिलिको मैंगनीज़, फेरो मैंगनीज़, फेरो सिलिकॉन, सिलिकॉन भेटल, फेरो मोलिब्डेनम आदि का निर्माण फर्नेस फीड के रूप में उनके अपने अयस्कों का प्रयोग करके किया जाता है। अतः सभी थोक फेरो अलॉय तथा चार्ज क्रोम एक ही स्थूल वर्गीकरण 'फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्क' के अंतर्गत आते हैं।

### भारतीय खनिज उद्योग परिसंघ (एफआईएमआई)

- चार्ज क्रोम भी फेरो अलॉय ग्रुप के अंतर्गत आता है और इसीलिए केवल कार्गो के नामों के कारण उनमें भिन्नता नहीं होनी चाहिए। पीपीटी चार्ज क्रोम के लिए 150/- ₹० प्रति मी.ट. और एचसीएफसी के लिए 132.25/- ₹० प्रति मी.ट. की दर पर घाटभाड़ा वसूल कर रहा है हालांकि चार्ज क्रोम और एचसीएफसी दोनों ही समान फेरो अलॉय ग्रुप के अंतर्गत आते हैं।
- पत्तन उच्चतर घाटभाड़ा वसूल करने के प्रयोजन से एचसीएफसी को चार्ज क्रोम के रूप में वर्गीकृत नहीं करेगा।
- एचसीएफसी और चार्ज क्रोम दोनों को एक ही शीर्ष 'फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्क' के अंतर्गत रखा जाएगा और घाटभाड़ा 132.25/- ₹० प्रति मी.ट. पर रखा जाएगा।

### फेरो अलॉयज कारपोरेशन लि० (एफएसीओआर)

- चार्ज क्रोम भी फेरो अलॉय ग्रुप में आता है अतः केवल कार्गो के नाम अलग होने से उनमें कोई भिन्नता नहीं होगी।
- पत्तन से चार्ज क्रोम तथा फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्को पर वसूल किए जाने वाले घाटभाड़े में विषमता को समाप्त करने के लिए और समय मांगा गया है। चार्ज क्रोम के

निर्यातकों को अपने प्रतियोगियों की तुलना में अधिक अर्थात् 150/- ₹ प्रति मी.ट. की दर पर घाटमाड़े का भुगतान करना पड़ रहा है जबकि उनके प्रतियोगी एचसीएफसी के लिए 132.25/- ₹ की दर पर घाटमाड़े का भुगतान कर रहे हैं। हालांकि चार्ज क्रोम और एचसीएफसी दोनों एक ही फेरो अलॉय ग्रुप के अंतर्गत आते हैं।

#### उत्कल चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री लि० (यूसीसीआई)

- (i) एचसीएफसी और चार्ज क्रोम दोनों फेरो अलॉय ग्रुप के अंतर्गत आते हैं। सिफारिश की जाती है कि एचसीएफसी पर लागू घाटमाड़े को फेरो अलॉय ग्रुप के अंतर्गत आने वाले कार्गो पर भी लागू किया जाए।
- (ii) पुरजोर सिफारिश की जाती है कि फेरो अलॉय ग्रुप शीर्ष के अंतर्गत घाटमाड़े को कम करके लगभग 105/- ₹ प्रति मी.ट. (जहाज़ पर्यंत मूल्य 0.5% मान कर) किया जाए और उसे फेरो अलॉय ग्रुप के अंतर्गत आने वाले सभी श्रेणियों के कार्गो पर लागू किया जाए।

3.2 उपर्युक्त टिप्पणियों प्रतिपुष्टि सूचना के रूप में पीपीटी को भेजी गई।

4.1 इस मामले में संयुक्त सुनवाई 4 मई, 2001 को पारादीप में की गई। संयुक्त सुनवाई में निम्नलिखित निवेदन प्रस्तुत किए गए :-

#### पारादीप पत्तन न्यास

- (i) हमने प्रस्ताव की बारीकियों की जाँच की है। यह मामला लेखा परीक्षा आपत्ति पर आधारित है।
- (ii) हमारा प्रस्ताव सर्वसामान्य है। हम प्रयोक्ताओं की बातों को ध्यान से सुनकर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- (iii) हमारे राजस्व (आय) में अचानक कमी नहीं आएगी। पत्तन के वित्तीय हितों पर इसका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

#### टाटा आयरन एण्ड कंपनी लि०

- (i) हमने गहराई से विश्लेषण किया है। चार्ज क्रोम में क्रोमियम और कार्बन कम होता है जबकि एचसीएफसी में अधिक होता है अतः एचसीएफसी फेरो अलॉय के अंतर्गत अधिक आता है।
- (ii) एचसीएफसी का निर्यात मूल्य 550 डॉलर हुआ करता था जो अब घटकर 380 डॉलर रह गया है अतः हमें जहाज़ पर्यंत मूल्य 0.5% मानकर चलना होगा जिससे निर्यात बाजार में उतार चढ़ाव के कारण दरों के निर्धारण पर कोई प्रभाव न पड़े।

#### इंडियन चार्ज क्रोम लि०

- (i) एचसीएफसी, चार्ज क्रोम आदि फेरो अलॉय हैं। सभी संसाधित अयस्क हैं और इसीलिए उन्हें 'फेरो' (लोह) के साथ मिलाया जा सकता है।
- (ii) सीमा शुल्क भी इन सबको एक ही शीर्ष 'फेरो अलॉय', (कोड नं० 72.02) के अंतर्गत वर्गीकृत करता है।
- (iii) चार्ज क्रोम तकनीकी नाम नहीं है बल्कि व्यापारिक नाम है। कृपया हमारे द्वारा दी गई परिभाषाएं देखिए। चार्ज क्रोम का निर्माण निम्न ग्रेड के क्रोम अयस्क से किया जाता है।
- (iv) सामान्य दर जहाज़ पर्यंत मूल्य की 0.5% होनी चाहिए।

#### 4.2 संयुक्त सुनवाई में निम्नलिखित निवेदन भी प्रस्तुत किए गए :-

- (i) पीपीटी ने विवरण की प्रति प्रस्तुत की है जिसमें वर्ष 1996-97 से 2000-01 के दौरान चार्ज क्रोम और फेरो क्रोम के लिए प्रहस्तिता यातायात को दर्शाया गया है। यातायात की प्रवृत्ति को देखने से पता चलता है कि चार्ज क्रोम के लिए यातायात 1996-97 में 117249 टन था जो 2000-01 में घटकर 34299 टन रह गया है और फेरो क्रोम के लिए यातायात 1996-97 में 7034 टन था जो वह 2000-01 में बढ़कर 94001 हो गया है।
- (ii) इंडियन चार्ज क्रोम लि० ने भारतीय मानक (दूसरा संशोधन) से फेरोक्रोमियम के विनिर्देशों से संबंधित उद्धरण प्रस्तुत किया है :-

'तनुकरण द्वारा प्राप्त न्यूनतम 45% और अधिकतम 95%

क्रोमियम अंश वाला लौह एवं क्रोमियम का मुख्य मिश्रण'

प्रलेख में फेरो क्रोमियम के विभिन्न प्रकारों जैसे - अधिक/मध्यम/कार्बन फेरोक्रोमियम, अधिक नाइट्रोजन न्यून कार्बन फेरोक्रोमियम तथा कार्बन रहित फेरोक्रोमियम के रासायनिक मिश्रण के बारे में भी बताया गया है।

#### 5. इस मामले की कार्यवाही के दौरान एकत्र की गई समग्र सूचना के संदर्भ में निम्नलिखित स्थिति स्पष्ट होती है :-

- (i) यह मामला अधिक कार्बन वाले फेरो क्रोम (एचसीएफसी) पर घाटभाड़े की वसूली के बारे में है। पीपीटी ने इसे 'फेरो अलॉय' के अंतर्गत वर्गीकृत किया है और तदनुसार घाटभाड़ा दर की वसूली करता है। लेखा परीक्षा ने इस वर्गीकरण पर आपत्ति की है और कहा है कि एचसीएफसी पर चार्ज क्रोम के समान घाटभाड़े की वसूली की जानी चाहिए। निर्यातक पीपीटी द्वारा किए गए वर्गीकरण का समर्थन तो करते हैं लेकिन यह भी मांग करते हैं कि चार्जक्रोम भी फेरो अलॉय है और इसीलिए इसके मामले में 132.25 ₹० प्रति मी.ट. की घाटभाड़ा दर ही लागू होगी।
- (ii) पीपीटी की दरों के मान में घाटभाड़ा अनुसूची में 'चार्ज क्रोम' [ मद 2 (i)] और 'फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्क' [ मद 2 (ii)] के लिए विशिष्ट प्रविष्टियाँ हैं। 'चार्ज क्रोम' की घाटभाड़ा दर में पीपीटी के प्रशुल्क के सामान्य संशोधन (अप्रैल, 2000) के समय कोई संशोधन नहीं किया गया और इसकी दर 150/- ₹० प्रति मी.ट. बनी रही। 'फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्क' की घाटभाड़ा दर प्रशुल्क के अंतिम संशोधन के समय संशोधित करके 132.25 ₹० प्रति मी.ट. कर दी गई है।
- (iii) धातुकर्म से जुड़ी जिन कंपनियों और खनिज निर्यातकों ने कार्यवाहियों में भाग लिया उन सभी ने यह दिखाने के लिए विश्वसनीय दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं कि चार्ज क्रोम एचसीएफसी से भिन्न उत्पाद है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया है कि इन दो उत्पादों का लक्ष्य प्रयोग भी भिन्न है। प्रयोक्ताओं के तर्क स्वीकार किए जाने योग्य हैं।
- (iv) तकनीकी पक्ष के अलावा, पीपीटी की दरों के मान में मौजूदा प्रावधान की जाँच करना संगत होगा। घाटभाड़ा अनुसूची की मद 2(i) में चार्ज क्रोम की दर निर्धारित है। यह निर्धारण चार्ज क्रोम एवं अन्य समान उत्पादों के लिए नहीं है बल्कि केवल चार्ज क्रोम के लिए है। अतः एचसीएफसी के मामले में घाटभाड़ा अनुसूची की मद 2 (i) के अंतर्गत निर्धारित घाटभाड़ा दर को लागू करने का प्रश्न ही नहीं उठता। एचसीएफसी चूंकि फेरो अलॉय है अतः इसकी घाटभाड़ा दर फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्क के लिए निर्धारित घाटभाड़ा अनुसूची की मद सं० 2(ii) के अंतर्गत विनियमित की जाएगी।
- (v) पीपीटी ने बताया है कि उसने घाटभाड़ा की वसूली के लिए एचसीएफसी को अवशिष्ट श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत करने के विकल्प पर विचार किया था। परंतु यह विकल्प बिल्कुल भी संगत नहीं है। किसी कार्गो का अवशिष्ट (गैर विनिर्दिष्ट) श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकरण अंतिम उपाय के रूप

मे किया जाता है। यह प्राधिकरण पहले ही यह निर्णय ले चुका है कि किसी कार्गो को अनिर्दिष्ट माल के रूप में वर्गीकृत करने से पहले संबंधित सीमाशुल्क वर्गीकरण को देखना होगा जिससे यह पता लगाया जा सके कि क्या कार्गो को घाटभाड़ा अनुसूची में उल्लिखित किसी विशिष्ट श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है। इस मामले में प्रयोक्ताओं ने इस बात पर बल दिया है कि सीमाशुल्क ने एचसीएफसी को 'फेरो अलॉय' के अंतर्गत वर्गीकृत किया है अतः एचसीएफसी को घाटभाड़े की वसूली के प्रयोजन से 'फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्क' श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।

- (vi) भारतीय मानक संस्थान ने फेरो क्रोमियम अलॉय को स्पष्ट रूप से न्यूनतम 45% और अधिकतम 95% क्रोमियम अंश वाले लौह एवं क्रोमियम के मिश्रण के रूप में परिभाषित किया है। परिभाषा के अनुसार चार्ज क्रोम भी फेरो क्रोमियम है और इसीलिए इसे 'फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्क' श्रेणी के अंतर्गत माना जा सकता है।

चार्ज क्रोम हालांकि फेरो अलॉय है परंतु पीपीटी द्वारा घाटभाड़ा अनुसूची में किया गया पृथक वर्गीकरण वाणिज्यिक प्रतिफलों पर आधारित हो सकता है। परंतु पीपीटी द्वारा प्रस्तुत यातायात आंकड़े चार्ज क्रोम के यातायात की ह्रासमान प्रवृत्ति को और फेरो क्रोम के यातायात की वर्धमान प्रवृत्ति को दर्शाते हैं। यातायात की बदलती हुई प्रवृत्ति को देखते हुए पीपीटी के लिए पहले प्राप्त किए गए वाणिज्यिक प्रतिफल की समीक्षा करना और चार्ज क्रोम को भी फेरो अलॉय की श्रेणी के अंतर्गत लाने तथा एक समान घाटभाड़ा दर रखने की व्यवहार्यता की भी जाँच करना उपयोगी रहेगा। प्रशुल्क में मध्यवर्ती समायोजन किए जाने से चूंकि पीपीटी में प्रशुल्कों के अंतिम सामान्य संशोधन के समय अपनाए गए वित्तीय मॉडल पर प्रभाव पड़ेगा अतः पीपीटी द्वारा प्रशुल्कों के आगामी सामान्य संशोधन के लिए प्रस्ताव तैयार करते समय प्रस्तावित युक्तिकरण को लागू किया जा सकता है।

6. परिणामस्वरूप, और उपर्युक्त कारणों से तथा समग्र विचार-विमर्श के आधार पर यह प्राधिकरण निर्णय करता है कि एचसीएफसी को पीपीटी द्वारा अपनी मौजूदा दरों के मान के अनुसार घाटभाड़े की वसूली के प्रयोजन से 'फेरो अलॉय एवं अन्य संसाधित अयस्क' ग्रुप के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाएगा।

एस. सत्यम, अध्यक्ष

[विज्ञापन III/IV/143/2001 असाधा.]

## TARIFF AUTHORITY FOR MAJOR PORTS

### NOTIFICATION

New Delhi, the 10th July, 2001

**No. TAMP/88/2000-PPT.**—In exercise of the powers conferred by Section 48 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963), the Tariff Authority for Major Ports hereby settles the issue about classification of High Carbon Ferro Chrome (HCFC) for the purpose of levy of wharfage by the Paradip Port Trust as in the Order appended hereto.

**SCHEDULE****Case No. TAMP/88/2000-PPT****The Paradip Port Trust (PPT)**

...

**Applicant****ORDER**

(Passed on this 28th day of June 2001)

This case relates to a proposal from the Paradip Port Trust (PPT) about the classification of High Carbon Ferro Chrome (HCFC) for the purpose of levying wharfage.

2.1. Earlier, the PPT sent a proposal in August 2000 about classification of HCFC and Charge Chrome for the purpose of levy of wharfage. The proposal sent by the PPT, however, did not contain a correct reference for adjudication. On being pointed out, the PPT submitted a revised proposal in December 2000 stating the exact subject for adjudication.

2.2. The PPT has made the following points in its proposal:

- (i). The PPT Scale of Rates contains separate classification and separate wharfage rates for 'Charge Chrome' and 'Ferro Alloys and Other Processed Ores', which presently stands at Rs.150/- PMT and Rs.132.25/- PMT respectively. The HCFC is not classified separately in the wharfage schedule. The PPT decided to classify the HCFC under the category of 'Ferro Alloys and other processed ores' for levy of wharfage.
- (ii). As per the wharfage schedule of the PPT Scale of Rates, in case a cargo is not specifically classified, wharfage can be realised @ 0.5% of the FOB value of the cargo. This works out to less than Rs.115/-PMT for HCFC.
- (iii). The Accountant General (Audit) of the Port has pointed out that the HCFC should be classified as Charge Chrome; whereas, the exporters have requested that HCFC should continue to be classified as Ferro Alloys and other processed ores.

2.3. In this backdrop, the PPT has requested this Authority to adjudicate on the following:

"whether HCFC is to be classified as 'Charge Chrome' for the purpose of levying wharfage".

3.1. In accordance with the procedure prescribed, the proposal of the PPT was circulated to all concerned users / representative bodies of port users for comments. The comments received are summarised below:-

**Tata Iron & Steel Company Ltd. (TISCO)**

- (i). HCFC and Charge Chrome are two different categories and their end use are also entirely different. HCFC should not be treated at par with the Charge Chrome only because of their similarity in the nomenclature.
- (ii). HCFC is used in special steel making where carbon content is not a constraint; Charge Chrome is mainly used for making Stainless Steel by AOD or BOD process. Charge Chrome is less expensive and also offers free iron contents to the user.
- (iii). HCFC is a distinct Ferro Alloy, whereas Charge Chrome has a very low chromium and high iron content. The ASTM specifications for HCFC and the Charge Chrome are also different which are as below:

Description	HCFC	Charge Chrome	
		High Fe	Low Fe
Cr	62 - 72%	52 - 58%	52 - 64%
C	4 - 9.5%	6 - 8%	4 - 6%
Si	3% max	6% max	8 - 14% max
S	0.06% max	0.04% max	0.04% max

**The Indian Charge Chrome Limited (ICCL)**

The classification of HCFC under Ferro Alloys and other processed ores for realisation of wharfage by the port is absolutely justified for the following reasons:

- (i). According to ASTM specifications/Bureau of Indian Standards, Charge Chrome is a product different from HCFC.
- (ii). Charge Chrome is produced out of low Cr/Fe Chrome ore.
- (iii). All bulk Ferro Alloys like Charge Chrome, High Carbon Ferro Chrome, Silico Chrome, Silico Manganese, Ferro Manganese, Ferro Silicon, Silicon Metal, Ferro Molybdenum, etc., are produced using their respective ores as furnace feed. So all bulk Ferro Alloys including Charge Chrome come under one broad classification Ferro Alloys and other processed ores.

**Federation of Indian Mineral Industries (FIMI)**

- (i). Charge Chrome also falls under Ferro Alloys group and hence there should not be any disparity merely going by the nomenclature of the cargo. The PPT is charging wharfage @ Rs.150/- PMT for Charge Chrome and Rs.132.25/- PMT for HCFC, though both Charge Chrome and HCFC fall under the same Ferro Alloys Group.
- (ii). The Port shall not resort to classifying HCFC as Charge Chrome for the purpose of levying higher wharfage.
- (iii). HCFC and Charge chrome, both shall be brought under one heading 'Ferro Alloys and other processed ores'; and, the wharfage shall be kept at Rs.132.25/- PMT.

**Ferro Alloys Corporation Limited (FACOR)**

- (i). Charge Chrome also falls under Ferro Alloys Group, so there shall not be any disparity merely going by the nomenclature of the cargo.
- (ii). The port has been requested time and again about removing the disparity in the wharfage being levied on Charge Chrome vis-à-vis Ferro Alloys and other processed ores. The exporters of the Charge chrome have to pay higher wharfage @ Rs.150/- PMT than their competitors who are paying wharfage @ Rs.132.25/-PMT for HCFC, though both Charge Chrome and HCFC fall under the same Ferro Alloys Group.

**The Utkal Chamber of Commerce & Industry Limited (UCCI)**

- (i). HCFC and Charge Chrome both fall under the Ferro Alloys Group. It is recommended that the wharfage applicable to HCFC shall be made applicable to the cargo coming under the Ferro Alloys Group.
- (ii). It is strongly recommended that the wharfage under the head Ferro Alloys Group shall be lowered to around Rs.105/- PMT (considering 0.5% of FOB value) to be made applicable to all categories of cargoes falling under the Ferro Alloys Group.

3.2. The comments received were sent to the PPT by way of feed-back information.

4.1. A joint hearing in this case was held on 4 May 2001 in Paradip. At the joint hearing, the following submissions were made:

**Paradip Port Trust**

- (i). We have not gone by the technicalities of the proposal. This case is based on an audit objection.



- (iii). There shall not be a sudden drop in our revenues. There shall not be any adverse impact on the financial interests of the port.

**Tata Iron & Steel Co. Ltd.**

- (i). We have done an in-depth analysis. Charge Chrome has less Chromium and less Carbon, HCFC has more. HCFC, therefore, goes more under Ferro Alloys.
- (ii). The value of HCFC exports used to be \$ 550; it has now come down to \$ 380. Let us, therefore, go by 0.5% of FOB value, so that rate fixation is not affected by export market fluctuations.

**Indian Charge Chrome Limited**

- (i). HCFC, Charge Chrome, etc. are Ferro Alloys. All are processed ores and all can, therefore, be combined together with 'ferro' (iron).
- (ii). The Customs also classifies all of these under one head i.e., "Ferro Alloys", (code No. 72.02)
- (iii). Charge Chrome is not a technical name, but a trade name. Please see the definitions given by us. Charge Chrome is produced out of low grade Chrome ore.
- (iv). The common rate should be 0.5% of the FOB value.

4.2. At the joint hearing, the following written submissions were also made:

- (i). The PPT has submitted a copy of the statement showing the traffic handled for Charge Chrome and Ferro Chrome during the year 1996-97 to 2000-01. The trend shows that the traffic for Charge Chrome has decreased from 117249 tonnes in 1996-97 to 34299 tonnes in 2000-01 and the traffic for Ferro Chrome has increased from 7043 tonnes in 1996-97 to 94001 tonnes in 2000-01.
- (ii). The Indian Charge Chrome Ltd. has submitted an extract from the Indian Standard (second revision) pertaining to the specifications of Ferrochromium, which states the definition of Ferro chromium as follows:

*" A master alloy of iron and chromium with chromium content of minimum 45% and maximum 95% by mass, obtained by reduction "*

The chemical composition of different kinds of Ferro chromium viz. High/Medium/Low Carbon Ferrochromium, High Nitrogen low carbon Ferrochromium and Carbon free Ferrochromium has also been stated in the document.

5. With reference to the totality of information collected during the processing of this case, the following position emerges:

- (i). The issue is about levy of a wharfage on High Carbon Ferro Chrome (HCFC). The PPT has classified it under 'Ferro alloys' and realises wharfage rate accordingly. The Audit has objected to this classification and says HCFC must be levied a wharfage rate same as that for Charge Chrome. The exporters support the classification done by the PPT but demand that even Charge Chrome is a ferro alloy; and, hence, a wharfage rate of Rs. 132.25 PMT shall only apply in its case.
- (ii). The wharfage schedule in the PPT Scale of Rates contains specific entries towards 'Charge Chrome' [item 2(i)] and 'Ferro alloys and other processed ores' [item 2(ii)]. The wharfage rate of 'Charge Chrome' did not undergo any revision during the last general revision of tariff of PPT (April 2000) and continued to be at Rs. 150/- PMT. The wharfage rate for 'Ferro alloys and other processed ore' has been revised to Rs. 132.25 PMT during the last revision of tariff.

- (iii). All the metallurgical companies and mineral exporters who participated in the proceedings have produced credible documentary evidence to show that Charge Chrome is a product different from HCFC. They have also pointed out that the end use of these two products is also different. The arguments of the users deserve to be admitted.
- (iv). The technical aspect apart, it is relevant here to examine the existing provision in the Scale of Rates of the PPT. Item 2(i) of the wharfage schedule prescribes a rate for Charge Chrome. The prescription is not for Charge Chrome and other similar products; it is only for Charge Chrome. There can be no doubt that HCFC is not Charge Chrome. That being so, the question of applying the wharfage rate prescribed under item 2(i) of the wharfage schedule in the case of HCFC does not arise at all. Since HCFC is a ferro alloy, its wharfage rate has to be regulated under item No. 2(ii) of the wharfage schedule which is for ferro alloys and other processed ores.
- (v). The PPT has mentioned that it had considered an option of classifying HCFC under the residuary category for levy of wharfage. This option is not at all relevant. Classifying any cargo under the residuary (unspecified) category is to be done as a last resort. This Authority has already held that before classifying any cargo as unenumerated goods, the relevant Customs classification shall be consulted to find out whether the cargo can be classified under any of the specific categories mentioned in the wharfage schedule. In the instant case, the users have pointed out that the Customs classify HCFC under 'ferro alloys'. That being so, HCFC can be classified under the 'ferro alloys and other processed ores' category for the purpose of levying wharfage.
- (vi). The Indian Standards Institute (ISI) clearly define Ferro Chromium alloy as a mixture of iron and chromium with the chromium content at a minimum of 45% and a maximum of 95%. As per this definition, Charge Chrome is also a ferro chromium, and hence can be treated under 'ferro alloys and other processed ores' category.

Even though Charge Chrome is also a ferro alloy, a separate classification made in the wharfage schedule by the PPT may be based on commercial considerations. The traffic figures furnished by the PPT, however, show a declining trend of Charge Chrome traffic and a surge in the traffic of ferro chrome. In view of the changing traffic pattern, it will be useful for the PPT to review the commercial consideration made by it earlier and to examine the feasibility of bringing Charge Chrome also under the category of ferro alloy and have a single wharfage rate. Since a mid-term adjustment of tariff will affect the financing model adopted at the time of the last general revision of tariffs at the PPT, the suggested rationalisation can be introduced by the PPT while formulating its proposal for the next general revision of tariffs.

6. In the result, and for the reasons given above, and based on a collective application of mind, this Authority decides that HCFC shall be classified under the group 'Ferro alloys and other processed ores' for the purpose of levy of wharfage by the PPT as per its existing Scale of Rates.

S. SATHYAM, Chairman

[Advt./III/IV/143/2001 Exty.]